सूमके घर

धूम

अनुवादकर्ता—

पं. रूपनारायण पाण्डेय

हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकरका सोलहवाँ ग्रन्थ

सूमके घर धूम

[स्वर्गीय नाट्याचार्य द्विजेन्द्रलाल रायके ‘ पुनर्ज
नामक प्रहसनका अनुवाद]

साथ सब ले जायँगे, यों कह रहे थे सेठ,
ना खिलायेंगे न खुद भी खायँगे भर-पेट ।
मौतका जामा पहिन तब ‘ हँसी ’ आई झूम,
निठुर बनकर लगी करने सूमके घर धूम ॥

अनुवादकर्त्ता-
पं० रूपनारायण पाण्डेय

प्रकाशक—
हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय, बम्बई

पाँचवीं बार] आश्विन, १९८८ वि० [मूल्य चार आने
अक्टूबर, १९३१ ई०

प्रकाशक,
नाथूराम प्रेमी,
हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय,
हीराबाग, गिरगाँव–बम्बई

मुद्रक,
रघुनाथ दिपाजी देसाई,
न्यू भारत प्रिंटिंग प्रेस,
कांदेवाडी, बम्बई नं. ४

वक्तव्य

डीन स्विफ्टने सचमुच ही एक पञ्चाङ्ग बनानेवाले जीते जागते ज्योतिषीको मुर्दा साबित कर दिया। उसके अत्याचारसे निरुपाय होकर ज्योतिषीने अपने तईं जीवित साबित करनेके लिए एक वकील नियुक्त किया। कहा जाता है कि तब भी वह ज्योतिषी अपने अस्तित्वको अच्छी तरह प्रमाणित नहीं कर सका। उक्त कथाको लेकर प्रसिद्ध नाटककार स्वर्गीय द्विजेन्द्रलाल राय महाशयने बंगलामें 'पुनर्जन्म' नामक एक प्रहसन लिखा था। उसीका यह हिन्दी अनुवाद है। इस प्रहसनका मर्म अगर पाठक जानना चाहें, तो वे अनुग्रहपूर्वक जरा ध्यान देकर इसपर विचार करें। इसमें नीतिके उपदेशका अभाव नहीं है।

विनीत—

रूपनारायण पाण्डेय

द्विजेन्द्र-नाटकावली

द्विजेन्द्र बाबूके जोड़के नाटक भारतकी किसी भी भाषामें नहीं। नीचे लिखे नाटक प्रकाशित हो चुके हैं। ये सभी देश-प्रेम, विश्व-प्रेम और उच्च श्रेणीके जातीय प्रेमसे भरे हुए हैं। इनका एक सेट मँगाकर अपने पुस्तकालयकी शोभा बढ़ाइए—

ऐतिहासिक		पौराणिक	
दुर्गादास	१)	भीष्म	१।)
मेवाड़-पतन	।।।=)	सीता	।।=)
शाहजहाँ	१)	पाषाणी (अहल्या)	।।।)
नूरजहाँ	१=)	**सामाजिक**	
चन्द्रगुप्त	१)	उसपार	१=)
राणा प्रतापसिंह	१।।)	भारत-रमणी	।।।=)
ताराबाई	१)	सूमके घर धूम	।)
सिंहल-विजय	१=)	**समालोचना**	
सुहराब-रुस्तम	।।=)	कालिदास और भवभूति	१।।)

नोट—हमारा बड़ा सूचीपत्र मँगाइए।

संचालक—हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय,

हीराबाग, गिरगाँव, बम्बई

सूमके घर धूम

स्थान—दौलतरामकी बाहरी बैठक । **समय**—दिन ।

(फर्श, टेबिल, कुर्सी आदि सब इधर उधर अस्त व्यस्त पड़ा हुआ है । पास ही एक पलंग पड़ा है । दीवारमें एक घड़ी लगी है । उसमें सात बजकर सत्रह मिनट हुए हैं ।)

[दौलतरामके विपत्नीक बहनोई बिहारीलाल और दौलतरामकी दुबाराकी स्त्री चुन्नी, दोनों खड़े हैं ।]

बिहारी—आज वही वैसाख-वदी चौथ है । मैंने पहलेसे ही सबको समझा रक्खा है ।

चुन्नी—मगर अब मैं सोचती हूँ कि इससे फल क्या होगा !

बिहारी—फल ? अगर कुछ न होगा, तो कमसे कम उस बेचारेकी जान तो बच जायगी । जानती हो, असामियोंने उसे (तुम्हारे स्वामीको) मौका पाकर मार डालनेका निश्चय कर लिया है !

चुन्नी—तो इसमें उनका अपराध क्या है ? सूदहीके लिए तो रुपये उधार दिये जाते हैं—सूद न लें ? जब महाजनीकी—

बिहारी—क्या गरीबोंका घर-द्वार बिकवा लेना महाजनी है ? यह तो राहज़नी है ! सबेरे उठकर इस डरसे उसका कोई नाम नहीं लेता कि उस दिन खानेको नहीं मिलेगा ! यात्राके समय कोई उसका मुख नहीं देखना चाहता ! बहुत लोग सबेरे-शाम उसकी मौत मनाते हैं ! यह क्या बड़े सुखकी अवस्था है ?

चुन्नी—तो फिर तुमने जो ढंग सोचा है, वह बहुत अच्छा है—भोजनका भोजन और दवाकी दवा ! लेकिन निशाना ठीक बैठे तो।

बिहारी—ठीक बैठेगा ! सालेको ज्योतिषके ऊपर बड़ा विश्वास है। ज्योतिषीके इस कहने पर उसको पूरा विश्वास हो गया है कि वैसाख-बदी चौथके दिन दोपहरको अपने ही घरमें साँपके काटनेसे उसकी मौत होगी।

चुन्नी—वे इस समय हैं कहाँ ?

बिहारी—मोती झीलके भीतर, गले भर पानीमें, यह समझकर चुपचाप बैठा है कि पानीके भीतर रहनेसे किस तरह अपने घरमें साँप काटेगा।

चुन्नी—(हँसकर) वाह !

बिहारी—आज बड़ा मजा होगा।

चुन्नी—बेशक, बड़ा मजा होगा। मगर अभी तक आये नहीं।

बिहारी—आता ही होगा।—तुमसे जो जो करनेको कह दिया है, सो सब याद है ?

चुन्नी—सब याद है।

बिहारी—अच्छा अब भीतर जाओ।

चुन्नी—खूब मजा होगा। अब तो देर सही नहीं जाती। (प्रस्थान।)

बिहारी—दौलतने पूर्वजन्ममें बड़ा तप किया था, इसीसे इस जन्ममें उसे ऐसी स्त्री मिली है ! सालेके बे-शुमार रुपये हैं, लेकिन अपनी स्त्री

तकको पेटभर भोजन नहीं दे सकता ! तब भी चुन्नी हँसती ही रहती है। कोई मजेकी बात होनी चाहिए—हँसते हँसते लोट-पोट हो जाती है।—साला कंजूसोंका सरदार है! बुढ़ापेमें ब्याह किया है—एक सुन्दर पढ़ी-लिखी औरत है—और एक महामूर्ख है। मूर्ख न होता, तो जन्मपत्रके फलपर विश्वास करता!

[नन्दू, मोहन, रामचन्द्र और सुन्दरका प्रवेश ।]

बिहारी—तुम लोग आगये? ठीक समय पर आये—दौलत आता ही होगा।

मोहन—यहाँ सब ठीक है?

बिहारी—सब ठीक है। केवल दौलतके दोनों लड़कोंसे अभी नहीं कहा गया। तीन दिनसे वे घर ही नहीं आये। पैसा खर्च न हो, इस लिए साला उनको पढ़ाता लिखता भी नहीं! ऐसी दशामें यदि वे बिगड़ न जायँ, तो और क्या हो? दोनों लड़के किसी कामके नहीं रहे।

मोहन—(सन्देहसे) हाँ!

बिहारी—लेकिन वे भी कहना मान जायँगे। वे भी राह देख रहे हैं कि कब बूढ़ा सूम मरे। बापके मरनेका हाल सुनकर लड़के क्या करते हैं, यह भी साला देख ले।—लो, वह आ गया दौलतराम! रामचन्द्र, लेट जाओ—लेट जाओ।

(रामचन्द्र लेट जाता है।)

बिहारी—तुम सब रामचन्द्रको घेरकर बैठ जाओ।

(सब वही करते हैं। बिहारी रामचन्द्रके ऊपर चादर डालता है।)

बिहारी—खूब दुःख दिखानेके ढंगसे बैठो, रामचन्द्र, हिलो डुलो नहीं।

(सब उसी तरह बैठते हैं।)

बिहारी—सब ठीक है?

सब—हाँ, सब ठीक है।

बिहारी—तो मैं जाता हूँ। ठीक समयपर आ पहुँचूँगा। अब तुम सब दुःख प्रकट करो।

[दौलतरामका प्रवेश।]

दौलत—खूब जान बचाई। जन्मपत्रका हिसाब भी गलत होता है। मैंने सोचा था, ठीक दो-पहरको जान जायगी। (घड़ी देखकर) दो-पहर बीत गई; अब कुछ डर नहीं।

मोहन—हाय हाय! बेचारा मर गया!

नन्दू—दोपहरको—

सुन्दर—साँपके काटनेसे!

दौलत॰—(घबराकर) कौन मरा?

मोहन—भाग्यके लिखेको—

नन्दू—कोई नहीं मिटा सकता।

सुन्दर—तब भी लोग ज्योतिषशास्त्रको नहीं मानते।

दौलत॰—अरे मरा कौन?

नन्दू—लड़कोंमेंसे तो कोई अभीतक नहीं आया।

मोहन—कबसे हम लोग बैठे हैं।

सुन्दर—और कबतक राह देखेंगे? चलो, लाशको मसान ले चलें।

दौलत॰—अरे भाई, किसकी लाश मसान ले जाओगे?

मोहन—हाय हाय, सेठ दौलतराम—

नन्दू—आखिरकार—

सुन्दर—मर ही गये!

दौलत॰—ऐं! दौलतराम मर गये! कौन दौलतराम?

मोहन—ऐसा घर-द्वार—

नन्दू—दुबारा ब्याही परम सुन्दरी स्त्री—

सुन्दर—हाय हाय !

दौलत०—कौन मर गया ?

मोहन—जी, सेठ दौलतराम !

दौलत०—(खफा होकर) दौलतराम क्यों मरने लगे साहब ?

नन्दू—क्यों मरने लगे, सो हम क्या जाने साहब !—लेकिन मर गये हैं !

सब—हाय हाय !

दौलत०—आप लोग कह क्या रहे हैं ? मैं तो जीता जागता खड़ा हूँ।

मोहन—आप कौन हैं साहब ?

दौलत०—मैं ही तो सेठ दौलतराम हूँ।

नन्दू—हूँ !

दौलत०—हूँ क्या ?

मोहन—वाह भैया वाह !

दौलत०—आप लोग क्या पागल हो गये हैं ? आप लोग देखते नहीं कि मैं ही दौलत—

मोहन—चले जाइए साहब ! शोकके समय दिल्लगी करना अच्छा नहीं लगता।

नन्दू—कोई गंजेड़ी है क्या !

सुन्दर—चल दे यहाँसे।

दौलत०—कैसी आफत है ! आप लोग क्या पागल हो गये हैं ? मैं ही दौलतराम सेठ हूँ। देख न लीजिए—

मोहन—हाँ ! अच्छा देखें । (देखता है ।)

(नन्दू उसका सिर घुमाकर सिरसे पैर तक निहारता है और सुन्दर उसके चारों ओर घूमकर देखता है ।)

नन्दू—अजी, देखनेमें तो सेठजीसे बहुत कुछ मिलता जुलता है !

सुन्दर—रूप तो खूब रक्खा है !

मोहन—वाह !

दौलत०—रूप रखना कैसा ?

मोहन—हाँ बना तो खूब है ! मगर यह नाक वैसी नहीं है !

दौलत०—नाक वैसी नहीं है, इसके क्या माने ? (नाकको टटोलकर देखना ।)

नन्दू—और रंग—रंग तो कुछ कुछ वैसा ही बना लिया है !

दौलत०—बना लिया है !

सुन्दर—चोटी भी रख ली है !—भई वाह !

मोहन—लेकिन यह नाक—

नन्दू और सुन्दर—हाँ, यह नाक—

दौलत०—नाक क्या हुई ?

मोहन—(सिर हिलाकर) नहीं,—नहीं बनी !

नन्दू—ऊँहूँ !

सुन्दर—असामियोंको धोखा न दे सकोगे ।

दौलत०—क्या ! आप लोग क्या यह कहना चाहते हैं कि मैं दौलतराम नहीं हूँ ?

मोहन—वाह भैया वाह ! तुम्हारी हिम्मत बेशक तारीफके लायक है । बोली भी वैसी ही बना ली !

नन्दू—बेशक !

सुन्दर—नकल बुरी नहीं की।

मोहन—हाय हाय, दुबाराकी ब्याही जोरू—

नन्दू—पढ़ी-लिखी—

सुन्दर—जवान !

दौलत०—जवान हो या बूढ़ी, तुम्हें इससे मतलब? वह मेरी जोरू है!

मोहन—खूब! सिर्फ असामियोंको धोखा देनेकी ही नियत नहीं है—

नन्दू—औरतपर भी हाथ सफा करना चाहते हैं हज़रत!

सुन्दर—हूँ!

दौलत०—आप लोग—कौन हैं आप लोग?

[असामियोंका प्रवेश।]

पहला असामी—क्यों साहब, सेठ दौलतराम क्या मर गये?

मोहन—जी हाँ, हम सब उनकी लाशको मसान लिये जाते हैं।

दूसरा असामी—ओह! यही वह आदमी है?

तीसरा असामी—जो सेठजीका रूप रखकर आया है?

दौलत०—रूप रखकर आया है?

सुन्दर—हाँ, यह वही आदमी है।

चौथा असामी—यह कोई ठग है।

दौलत०—ठग है!—निकल जाओ मेरे घरसे।

पाँ० असामी—तुम निकल जाओ।

दौलत०—यह मेरा घर है।

दू० असामी—ओह! हम लोगोंको धोखा देने आये हो? लेकिन हम धोखा नहीं खा सकते।

चौ० असामी—हम एक पैसा न देंगे।

दौलत०—नालिश होनेपर एक पैसेसे बहुत अधिक देना पड़ेगा।

ती० असामी—नालिश करेगा! हिम्मत तो देखो!

पाँ० असामी—मैं तुमको पुलिसके सिपुर्द कर दूँगा।

ती० असामी—बुलाओ पुलिस!

चौ० असामी—मैं तुम्हारा सब ढोंग अभी निकाले देता हूँ।

दू० असामी—जाओजी, पुलिसको तो बुला लाओ।

(पहले असामीका प्रस्थान।)

मोहन—चलो नन्दू, हम लोग लाश ले चलें। कहाँ तक राह देखेंगे!

सुन्दर—उठाओ।

नन्दू—हाँ, उठाओ—

(लाशको उठाना।)

सब—राम नाम सत्य है, सत्य बोलो मुक्त है। (प्रस्थान।)

दौलत०—ये लोग मसान किसकी लाश ले गये! दौलतराम सेठकी? तो फिर मैं कौन हूँ?

दू० असामी—धोखेबाज!

दौलत०—गाली-गुफ्ता न करना, कहे देता हूँ—

ती० असामी—अच्छा रूप रक्खा है!

दौलत०—फिर!

चौ० असामी—मारो सालेको!

दौलत०—अजी साहब—

सब—चुप रहो।

(क्रमश: सबका मिलकर उसे मारना।)

दौलत०—सिपाही, ओ सिपाही !

[एक तरफसे दौलतकी लड़की और दूसरी तरफसे बिहारीका प्रवेश।]

बिहारी—क्या है जी, क्या है ! यह गोलमाल और गुल-गपाड़ा काहेका है ?

दौलत०—आ गये बिहारी ? देखो तो भाई—

सब—चुप रहो।

बिहारी—मामला क्या है !

दौलत—ये लोग देखो तो—

सब—चुप रहो।

बिहारी—अरे भाई मामला क्या है ?

दू० असामी—जी, सेठ दौलतराम मर गये हैं।

ती० असामी—यही सुनकर हम लोग भी आये हैं।

चौ० असामी—लेकिन बीचमें यह पाजी न जाने कहाँसे सेठ दौलतरामका रूप रखकर आ गया !

दौलत०—लेकिन मैं—

सब—चुप रहो।

बिहारी—आः—गोलमाल क्यों करते हो साहब ! मैं सब ठीक किये देता हूँ !—सेठ दौलतराम मर गये हैं ?

दू० असामी—जी हाँ।

बिहारी—लेकिन मैंने तो नहीं सुना ! ऐसा हो ही नहीं सकता !

दौलत०—देखो तो, मैं जीता जागता—

सब—चुप रहो।

बिहारी—आः, क्या करते हो ! तुमको ठीक मालूम है कि सेठजी अन्तकाल कर गये ?

ती० असामी---जी हाँ। आपके आनेके कुछ ही पहले लोग उनकी लाशको मसान ले गये हैं।

बिहारी---कब ?

चौ० असामी---अभी दो-पहरको।

बिहारी---कैसे मरे ?

दू० असामी---साँपके काटनेसे।

बिहारी---दो-पहरको साँपने काटा। ऐसा हो ही नहीं सकता।

दौलत०---देखो तो भाई, यह अत्याचार देख रहे हो! मेरे जीते जी ही---

सब---चुप रहो!

बिहारी---दो-पहरको साँपके काटनेसे कैसे मरे ?

दू० असामी---कोई उपाय न था। जन्मपत्रमें लिखा था। क्या करते ?

बिहारी---अच्छा, जन्मपत्र निकालो। (लड़कीसे) ले तो आ बेटी, अपने बापका जन्मपत्र।

(लड़कीका जाना।)

बिहारी---जन्मपत्रमें लिखा है ?---ठीक जानते हो ?

चौ० असामी---ठीक।

ती० असामी---हम लोग क्या झूठ कह रहे हैं ?

दौलत०---लेकिन मैं तो जीता हूँ।

बिहारी---अच्छा ठहरो, कुंडली देखनेसे आप मालूम पड़ जायगा।

दौलत०---यह तो बड़ी मुश्किल देख पड़ती है। क्या तुम भी मुझको नहीं पहचानते ?

बिहारी---आप घबराते क्यों हैं साहब, वह देखिए जन्मपत्र आगया।

(लड़कीका जन्मपत्र लाकर बिहारीको देना।)

बिहारी—कहाँ लिखा है ?

चौ० असामी—देखूँ—यह देखिए—वैसाख-वदी चौथके दिन दोपहरको साँपके काटनेसे मौत लिखी हुई है। स्पष्ट ही तो लिखा है कि चौथके दिन दो-पहरको केतुकी दशा उतरनेके पहले घरमें साँपके काटनेसे मौत होगी।

बिहारी—हाँ ठीक तो है। (लड़कीसे) जाओ बेटी, तुम भीतर जाओ।

(लड़कीका जाना।)

बिहारी—(चिन्तित भावसे पढ़ते पढ़ते और मूछोंपर हाथ फेरते फेरते) हूँ! ठीक, लिखा हुआ तो है।

दौलत०—लेकिन तुम तो भाई, मुझे पहचानते हो।

बिहारी—(धीरे धीरे सिर हिलाकर) ऊँ, हूँ!–केस (Case) खराब है।

[मोहनका फिर प्रवेश।]

मोहन—यह डॉक्टरका दिया हुआ सेठजीका मौतका सर्टिफिकेट भी लीजिए।

बिहारी—क्या ? सर्टिफिकेट ?

मोहन—हाँ, यह देखिए, दौलतराम सेठके मरनेकी बात लिखी हुई है–I certify that Seth Daulatram is defunct. He is as dead as doornail.

दौलत०—अरे बापरे !

बिहारी—साहब—आपका केस (Case) धीरे धीरे बहुत ही खराब होता जा रहा है। शायद चल ही नहीं सकता।

दौलत०—क्यों ?

बिहारी—इधर जन्मपत्र है, उधर डॉक्टरका सर्टिफिकेट है।

ती० असामी—फिर हम सब लोगोंने अपनी आँखोंसे देखा है कि लोग सेठ दौलतरामकी लाश मसान ले गये हैं।

बिहारी—सबने देखा है ?

असामी लोग—हाँ, सबने !

बिहारी—ऊँहूँ—केस (Case) किसी तरह टिक नहीं सकता।—इतनेपर भी अगर कोई जिन्दा रहे तो—

दौलत०—(आग्रहके साथ) तो फिर ?

बिहारी—तो वह जीना नामंजूर।

दौलत०—बिहारी, तुम भी क्या मुझको नहीं पहचान सकते ?

बिहारी—इससे अधिक मैं कुछ नहीं कह सकता। पृथ्वीपर कभी कभी दो आदमी बिलकुल एक ही सूरतके देख पड़ते हैं। जैसे जोड़ियाकी पैदाइश। इस बातका कोई प्रमाण नहीं कि दौलतरामके बापको दो जोड़िया लड़के नहीं पैदा हुए थे। दौलतरामके पितासे कभी यह बात पूछी नहीं गई और इस समय उनसे पूछना असंभव है, क्योंकि वे इस समय स्वर्गमें हैं।

दौलत—लेकिन मैं तो कहता हूँ।

बिहारी—आपकी बात मानी नहीं जा सकती। आप कौन हैं, यही तो मामला पेश है। अगर मैंने आपको दौलतराम मान ही लिया, तो आप साबित क्या करेंगे ? आपके कहनेसे कुछ साबित नहीं होता।

दौलत०—तो फिर कैसे साबित होगा ?

बिहारी—आपके कोई गवाह है ?

दौलत०—नहीं। पर उसकी जरूरत क्या है ?

बिहारी—ये सब लोग एक स्वरसे कहते हैं कि आप सेठ दौलत-राम नहीं हैं। (असामियोंसे) क्यों, आप लोग कहते हैं न ?

सब असामी—हाँ, हम सब कहते हैं।

दौलत०—आप लोग क्या सचमुच गंभीर भावसे यह बात कहते हैं?

सब असामी—गंभीर! जरा इधर देखिए, (अत्यन्त गंभीर भावसे) आप सेठ दौलतराम कभी नहीं हैं।

दौलत०—तो क्या सचमुच मैं सेठ दौलतराम नहीं हूँ?

दू० असामी—कभी नहीं।

ती० असामी—दौलतरामका क्या ऐसा ही चेहरा था?

चौ० असामी—दौलतराम बनकर असामियोंको धोखा देने आये हो भैया!

पाँ० असामी—मैं तो देनेके नाम एक पैसा भी न दूँगा।

दौलत—मैं नालिश करूँगा।

बिहारी—अदालतमें तुम्हारी नालिश मंजूर ही कब होगी? इन्होंने तो सेठ दौलतरामसे कर्ज लिया था। आप तो सेठ दौलतराम हैं ही नहीं।

दौलत०—मैं सुबूत दूँगा।

बिहारी—साबित करना मुश्किल हो जायगा। (असामियोंसे) आप सब लोग शायद गवाही देंगे कि यह सेठ दौलतराम नहीं है?

सब असामी—(एक साथ) जरूर।

बिहारी—फिर क्या हो सकता है?

(दौलतका हताश-भाव दिखाना।)

बिहारी—साहब, मैं वकील हूँ। आपको दोस्तके तौरपर सलाह देता हूँ कि ऐसा काम न कीजिएगा, नहीं तो जेल जाना पड़ेगा।

दौलत०—जेल?

बिहारी—हाँ, जाली आदमी बननेके जुर्ममें! चार सालके लिए!

दौलत०—अरे बापरे!

बिहारी—यद्यपि मैं आपको नहीं पहचानता, तथापि दोस्तकी तौर-पर समझाता हूँ कि जान बूझकर इस आफतमें पैर न रखना! सुनिए, आप किसी तरह पूरी तौरसे यह साबित न कर सकेंगे कि आप दौलतराम सेठ हैं।

दौलत०—क्यों?

बिहारी०—इस आपके जन्मपत्रने ही सब मामला बिगाड़ रक्खा है। भला आप ही कहिए, जन्मपत्र कहीं झूठा होता है?

दौलत०—(सिर खुजाते हुए) हाँ, जन्मपत्र तो कभी झूठा नहीं होता।

बिहारी—उसके ऊपर डॉक्टरका सर्टिफिकेट—जो लोग मरेको जिला नहीं सकते, मगर जिन्दाको अनायास ही मार डाल सकते हैं। मैं कहता हूँ, आपके सेठ दौलतराम होनेमें घोर सन्देह है, और अगर आप हों भी, तो साबित करना असंभव है।

दौलत०—तुमको भी सन्देह है?

बिहारी०—आप ही सोचकर देखिए। आपको खुद क्या सन्देह नहीं होता? इधर जन्मपत्र और उधर डॉक्टरका सर्टिफिकेट!

दौलत०—डॉक्टरने क्या सचमुच लिखा है कि मैं मर गया?

बिहारी—यह देखिए न। (सर्टिफिकेट देना।)

दौलत०—(सिर खुजाते हुए) हाँ, लिखा तो है!

बिहारी—आपके सामने ही वे लोग सेठजीकी लाशको मसान ले गये, और फिर भी आपको अपने सेठ दौलतराम होनेमें सन्देह नहीं होता?

दौलत०—(धीरेसे) हाँ, ले तो गये हैं। (सिर पकड़कर) मुझे चक्कर आ रहा है।

[अखबार पढ़ते पढ़ते नन्दूका प्रवेश।]

नन्दू—

मर गये लाला दौलतराम। जो थे सूम बहुत बदनाम ॥
लेते बेशुमार थे सूद। वैसे हुए नेस्तनाबूद ॥
जोंक बना था वह मनहूस। ऋणी-रक्त-धन लेता चूस।
कष्ट उठाकर था धन जोड़ा। मरनेपर अब जाकर छोड़ा ॥
जिनको बदा वही खावेंगे। सेठ कियेका फल पावेंगे ॥

बिहारी—यह क्या! अखबारोंमें भी सेठजीके मरनेका हाल छप गया?

नन्दू—जी हाँ।

बिहारी—क्या छापेके अक्षरोंमें?

नन्दू—देखिए न।

बिहारी—(अखबार देखकर दौलतसे) साहब, आपका केस (Case) होपलेस (Hopeless) हो गया है।

(दौलतराम सिर पकड़कर बैठ जाता है।)

बिहारी—(असामियोंसे) आप लोग इस समय अपने अपने घर जाइए। मैं अब दौलतरामकी इस्टेट (Estate) को एडमिनेस्ट्रेशन (Administration) में लेनेका प्रबन्ध करने जाता हूँ।

दौलत०—(उठकर) लेटर ऑफ एडमिनेस्ट्रेशन (Letter of Administration!) कौन लेगा?

बिहारी—दौलतरामकी विधवा स्त्री। अब मुझे ही इस जायदादका इन्तजाम करना होगा। क्या करूँ?—(असामियोंसे) तुमपर जो रुपये बाकी हैं, उनका सूद अब तुमसे नहीं लिया जायगा।

दौलत०—क्यों?

असामी—जय हो, बिहारी भैय्याकी जय हो!

(प्रस्थान।)

दौलत०—(बिहारीसे) सूद क्यों न लिया जायगा ?

बिहारी—सूद लेनेकी जरूरत क्या है ? सेठजी बहुतसा रुपया छोड़ गये हैं।

दौलत०—छोड़ गये हैं ! (नम्रता दिखाते हुए) बिहारी, भाई, लेकिन मैं तो मरा ही नहीं ! तुम्हारी कसम मैं नहीं मरा !

बिहारी—मैं क्या करूँ साहब ? कानूनसे आपका जीना साबित नहीं होता (प्रस्थान।)

[परोसिनोंका प्रवेश।]

१ परोसिन—अच्छा हुआ।

२ परोसिन—आफत गई।

३ परोसिन—बहुत रुपये जमा कर गया है। आप भरपेट नहीं खा सका—

४ परोसिन—अब दस गैर लूटकर खायँगे।

५ परोसिन—सूमका धन इसी तरह जाता है।

दौलत०—सुन सुनकर मुझे भी सन्देह हो रहा है कि मैं जीता हूँ या मर गया हूँ ! परोसिनो !—

१ परोसिन—यह कौन है ?

दौलत०—मैं—

२ परोसिन—बहुरूपिया ?

दौलत०—दौलतराम—

३ परोसिन—अरे मर !

दौलत०—सेठ—

४ परोसिन—मर गया !

दौलत०—नहीं, अभी नहीं मरा !

५ परोसिन—निकल यहाँसे मुर्दे !

दौलत०—मैं निकलूँ ?—यह मेरा घर है हरामजादियो, तुम निकलो !

१ परोसिन—यह कौन है रे !

२ परोसिन—हम क्यों निकलें रे ?

३ परोसिन—हाँ, हम क्यों निकलें ?

४ परोसिन—बतला तो सही !

५ परोसिन—मर मुर्दे !

दौलत०—(अवाक् होकर) वाह !

१ परोसिन—कलमुँहा मर गया, अच्छा हुआ। (बैठती है।)

२ परोसिन—लोगोंकी जान बची। (बैठती है।)

३ परोसिन—दोनों लड़के पेट-भर खायँगे। (बैठती है।)

४ परोसिन—लड़की मगर खानेको न पावेगी। (बैठती है।)

५—परोसिन—बुड्ढेको नरकमें भी जगह न मिलेगी। (बैठती है।)

दौलत०—बैठ गईं ! दौलतराम ! सँभालो, तुम्हारा अस्तित्व ही मिटाया जा रहा है ! अपनेको बचाओ—नहीं तो बस मरे !—(परोसिनोंसे) निकलो हरामजादियो यहाँसे; निकलो—निकलो ! न निकलोगी ? अच्छा ठहरो—(बाहरसे लकड़ी लाकर) निकल जाओ, इसीमें खैर है, नहीं तो देखो इसी लकड़ीसे—

१ परोसिन—वाह, खूब बना है !

दौलत०—निकलो !

२ परोसिन—मारेगा क्या ?

दौलत०—मार डालूँगा। (लाठी घुमाते हुए) निकलो !

३ परोसिन—मार तो सही ! देखें तो ! (ईंट उठाना।)

दौलत०—अरे बापरे ! (पीछे हटता है।)

४ परोसिन—निकल मुर्दे, निकल, नहीं तो सिर तोड़ दूँगी !

दौलत०—(डरकर) नहीं नहीं—मैं जाता हूँ।

५ परोसिन—नहीं तो (झाड़ू उठाकर) यह झाड़ू देखी है ?

दौलत०—अरे बचाओ।

(दौलत भागता है और उसके पीछे दौड़ती हुई परोसिनें जाती हैं।)

[दौलतकी लड़कीका प्रवेश।]

लड़की—लालाजी ! लालाजी ! अम्मा रो रही है।

[दौलतरामका प्रवेश।]

दौलत०—कौन रो रहा है ?

लड़की—अम्मा।

दौलत०—क्यों ?

लड़की—मैं क्या जानूँ ?

(नेपथ्यमें विलाप।)

“ अरे तुम कहाँ चले गये—तैयार रसोई छोड़कर कहाँ चल दिये—ऊँ हूँ हूँ हूँ ! ”

दौलत०—वाह वाह, औरत तकने मरा समझकर रोना शुरू कर दिया ! अरे मुनुआकी अम्मा—मैं जीता हूँ। आया। (लड़कीसे) चलो बेटी।

(कन्याका जाना और उसके पीछे दौलतरामका जानेकी चेष्टा करना।)

[दौलतरामके सालोंका प्रवेश। उनके साथ सन्दूक, पिटारे ट्रंक वगैरह हैं।]

१ साला—ले चलो, ले चलो !

दौलत०—अरे यह क्या है ?

२ साला—अजी कुलीको बुलाओ !

३ साला—कुली ! कुली ! (प्रस्थान।)

दौलत०—अरे कुलीको क्यों पुकारते हो ? सब सामान क्यों घरसे बाहर निकाल फेंके देते हो ?

२ साला—ले जायँगे।

दौलत०—कहाँ ?

१ साला—कहाँ ? अपने घर, और कहाँ ?—

दौलत०—क्यों ? मेरा सामान अपने घर क्यों ले जाओगे ?

२ साला—तुम्हारा सामान ?

दौलत०—जी।

१ साला—(व्यंग्यके तौरपर) जी,—लो कुली आ गये।

[तीन चार कुलियोंके साथ तीसरे सालेका फिर प्रवेश।]

२ साला—उठाओ, पहले यह लोहेका सन्दूक उठाओ।

(कुली लोहेका सन्दूक उठानेकी कोशिश करते हैं।)

दौलत०—खबरदार ! (आगे बढ़ता है।)

१ साला—चुप रहो ! (मारनेको तैयार होता है।)

दौलत०—बिहारी ! बिहारी ! (जाता है।)

(सब सालोंका एक दूसरेको देखकर इशारा करना और हाथकी ओट करके हँसना।)

१ साला—बिहारीको लेकर फिर आ रहा है।

२ साला—(कुलीसे) झट उठाओ—

३ साला—जल्दी जल्दी !

[बिहारीके साथ दौलतरामका फिर प्रवेश।]

दौलत०—बिहारी, देखो तो सही, कैसा अन्धेर है—

बिहारी—(दौलतके सालोंसे) क्यों साहब, आपलोग घरका असबाब कहाँ लिये जा रहे हैं ?

१ साला—क्यों न ले जायँ ? ये सब चीजें अब हमारी बहनकी हैं।

२ साला—वह अब हम लोगोंके पास रहेगी।

३ साला—क्योंकि हमारे जीजाजी मर गये हैं।

दौलत०—देखते हो अंधेर! मेरे जीते जी यह अत्याचार हो रहा है। उधर स्त्री जा रही है और इधर मेरा सब कुछ—(रोता है।)

बिहारी—भाइयो, दौलतरामकी विधवा इस समय मेरी स्त्री है। क्योंकि हाल ही मेरी स्त्री मर गई है और तुम्हारी बहनका पति मर गया है।

दौलत०—इससे यह प्रमाणित हो गया कि मेरी स्त्री तुम्हारी स्त्री है?

बिहारी—कमसे कम यह साबित करना कुछ कठिन नहीं है। (दौलतके सालोंसे) आप लोग इस समय घर जाइए। इस लोहेके सन्दूकको मैं अपने जिम्मे लेता हूँ।

साले—यह क्या साहब?

बिहारी—ज्यादह चालाकी न कीजिएगा। मैं वकील हूँ। बस, चले जाइए।

साले—अगर न जायँगे तो?

बिहारी—तो कानूनी बहससे तुम लोगोंको उड़ा दूँगा। गवाहोंके द्वारा खाकमें मिला दूँगा।

साले—अरे बापरे! चलो, चलो। (जाते हैं।)

बिहारी—(दौलतसे) अब आप भी जाइए। यह घर अब मेरा है। सेठ दौलतराम मर गये।

दौलत०—लेकिन मैं तो मरा नहीं।

बिहारी—इसके लिए प्रमाणकी आवश्यकता है। कोई गवाह है?

दौलत०—क्यों, मेरी स्त्री गवाही देगी।

बिहारी—अच्छी बात है, अपनी स्त्रीको बुलाइए।

दौ०—सुनती हो मुनुआकी अम्मा ! जरा इधर आओ । लज्जा करके अब क्या होगा ? मैं जान और मालसे जा रहा हूँ। बाहर आओ।

[रोते रोते चुन्नीका प्रवेश ।]

मैं हुई अकेली छुटे सहारे सारे।
इस तरह छोड़कर कहाँ सिधारे प्यारे ?
मैं नहीं जानती राह, भटकना होगा।
ठोकर खाकर सिर-पैर पटकना होगा ॥
हे प्राणनाथ, दो दरस, तरस कुछ खाओ।
पैरोंसे ठेलो नहीं, नाथ, अपनाओ ॥
मैं व्याकुल रोती यहाँ तुम्हारे मारे।
इस तरह छोड़कर कहाँ० ॥

दौलत०—नहीं नहीं, मैं पैरोंसे नहीं ठेलूँगा। आहा, कैसी सती स्त्री है।

(चुन्नीका रोते हुए गाना।)

यह कढ़ी, पकौड़ी, बड़े, मुँगौड़ी, भाजी।
है सभी रसोई अभी बनाई ताजी ॥
बिधना, तूने क्या निठुर ठान ठाना है ?
अफसोस, अकेले मुझे सभी खाना है ॥
तुमको न बदे थे खान-पान ये न्यारे।
इस तरह छोड़कर कहाँ०

दौलत०—रसोई बनाई है ? मैं भी तुम्हारे साथ खाऊँगा। आहा, कैसी सती लक्ष्मी है !

(चुन्नीका रोते हुए गाना।)

मल-मलकर नित्य खिजाब अजीब मसाले।
सन ऐसे उजले बाल बनाकर काले ॥
ज्वानीकासा सब रंग ढंग दिखलाना।
सोनेके तारों बँधे दाँत चमकाना ॥

सपने ऐसी वह हँसी हुई दैयारे !
इस तरह छोड़कर कहाँ० ॥

दौलत०—अरे मैं हँसूँगा। (दाँत निकालकर हँसता है।)

(चुन्नीका रोते हुए गाना।)

आकर अब मुझको कौन कहेगा प्यारी ?
बढ़िया ला देगा कौन दुपट्टे सारी ?
एसेंस, लवेंडर, टूथ-पाउडर साबन।
किससे अब माँगूँ, राम, जड़ाऊ जोशन ॥
मिलकर मरते तो रंज न कुछ फिर था रे ॥
इस तरह छोड़कर कहाँ० ॥

दौलत०—मेरी प्यारी, रोओ मत, मैं आता हूँ। (चुन्नीका हाथ पकड़ता है।)

चुन्नी—अरे बापरे ! यह कौन है ?

दौलत०—मैं तुम्हारा स्वामी हूँ—तुम्हारा प्यारा हूँ—तुम्हारा नाथ, तुम्हारा प्राणेश्वर, तुम्हारा हृदय-सर्वस्व सेठ दौलतराम हूँ। देखो, जरा इधर देखो।

चुन्नी—(घूँघट खोलकर देखकर) अरे बापरे ! (मूर्च्छाका अभिनय करती है।)

दौलत०—ऐं ! यह क्या बात है ?

बिहारी—तू कौन पाजी है ! भले आदमीकी औरतके बदनमें हाथ लगाता है ?

दौलत०—यह तो मेरी ही स्त्री है।

बिहारी—तुम्हारी ?

दौलत०—हाँ !

बिहारी—तुम बड़े भले आदमी हो !

दौलत०—यह मेरी स्त्री है।

(चुन्नीका उठना।)

दौलत०—वह देखो, होश आ गया।

चुन्नी—मैं उनके बिना नहीं रह सकती।

बिहारी—धन्य पतिव्रता!

चुन्नी—मैं अबला सरला विह्वला बाला—

बिहारी—हाय हाय!

चुन्नी—दैवकी सताई दुखाई मुरझाई—

बिहारी—हाय हाय!

चुन्नी—मैं अलबेली नवेली अकेली कैसे रह सकती हूँ?

बिहारी—अकेली क्यों रहोगी मोहिनी, मायाविनी, बिहारीके जीते जी तुमको काहेकी चिन्ता है?

दौलत०—बिहारी, तुम्हारी यह हरकत?

चुन्नी—अभी मेरे पतिका पीछा हुआ है—

बिहारी—मेरी भी स्त्री अभी मरी है—

चुन्नी—मनकी हालत—

बिहारी—बहुत—

दौलत०—खराब है! सो तो समझा। लेकिन—

बिहारी—(चुन्नीसे) जाओ, अब तुम भीतर जाओ, मैं ब्याहकी तैयारी करने जाता हूँ।

(चुन्नीका जाना।)

दौलत०—कैसे! ब्याह और क्रिया-कर्म एक साथ ही होगा? हा जगदीश्वर!

बिहारी—लाठी कहाँ है? यह है। (लाठी लेना।)

दौलत०—लकड़ीकी क्या जरूरत है?

बिहारी—स्त्रीको वश करनेकी तैयारी पहलेहीसे कर दूँ। ५०००) रुपयेका गहना है। १०००) रुपये नकद तो चुन्नीके ही पास हैं।

दौलत०—देखो, तुम मेरे बहनोई हो, वकील हो। तुम ऐसे नीच नहीं हो सकते कि मेरे जीते ही मेरी स्त्रीसे ब्याह करो।

बिहारी—नीच कैसा? विधवासे ब्याह करनेमें मुझे कोई आपत्ति नहीं है।

दौलत०—किन्तु वह तो मेरी स्त्री है।

बिहारी—यह बात तो वह खुद नहीं स्वीकार करती।

दौलत०—ईश्वर! (रोता है।)

बिहारी—देखिए साहब, आपको देखकर मुझे दुःख होता है। शायद आप दौलतराम सेठ ही हों। किन्तु प्रमाण नहीं है। कानूनमें आप टिक नहीं सकते। बतलाइए, क्या करूँ?

दौलत०—यही तो बात है। स्त्रीने नही पहचाना! या मैं सचमुच, मर गया हूँ, देखूँ। समस्या यह है कि मैं मर गया हूँ या जीता हूँ? मैं लहरोंमें पकड़कर तूफानसे भरे संसार-सागरमें बहा बहा फिर रहा हूँ; या खेल खेल रहा हूँ? मैं शेर रीछ साँप आदिसे परिपूर्ण बनके घोर घने अन्धकारमें रो रहा हूँ, या गाना गाता हूँ? चुटकी काटकर देखूँ, (चुटकी काटता है) लगता तो है! सिर हिला-डुलाकर देखूँ! (वैसा ही करता है) कुछ भी समझमें नहीं आता!—नहीं, यह न जीना है, न मरना है। यह जीने-मरनेकी एक खिचड़ी है! कैसी आफत है! मैंने स्वप्नमें भी नहीं सोचा था कि मेरी ऐसी दशा होगी।—ये कौन हैं? ये तो सब मेरे सगे हैं! अच्छा, छिपकर देखूँ, ये क्या करते हैं? (छिपता है।)

[बांजे-गाजेके साथ दौलतके नातेदारोंका प्रवेश।]

१ आदमी—यहीं बैठो (बैठता है)

२ आदमी—हाँ, आज जरा जी भरकर आनन्द मना लें। (बैठता है)

३ आदमी—(बैठकर) बुड्ढा अब जाकर मरा।

४ आदमी—मैं तो बहुत खुश हुआ। (बैठता है)

५ आदमी—एक पैसा किसीको नहीं दिया। (बैठता है)

१ आदमी—बड़ा कंजूस था।

३ आदमी—वह समझे था कि मैं कभी नहीं मरूँगा।

२ आदमी—तो यह प्रमाणित हुआ कि दौलतराम सेठको भी मौत नहीं छोड़ती!

४ आदमी—खूब कहा—हाः हाः हाः हाः—

५ आदमी—हाः हाः हाः हाः—

दौलत०—ये लोग तो खूब खुश देख पड़ते हैं।

१ आदमी—बुड्ढा बड़ा सूम था।

२ आदमी—आफत गई।

दौलत०—एहसानमन्द हूँ।

३ आदमी—वसीयतनामेमें जरूर हम लोगोंके लिए कुछ लिख गया होगा।

दौलत०—(अँगूठा दिखाकर) एक पैसा भी नहीं।

५ आदमी—किसीको तो दे ही गया होगा।

दौलत०—किसीको नहीं।

६ आदमी—साथमें तो ले जा सकेगा नहीं।

दौलत०—सन्दूकोंको न ले जा सकूँगा, चाबियोंका गुच्छा तो ले जा सकूँगा!

२ आदमी—दूसरे जन्ममें सिर पीटेगा।

दौलत०—सिर पीटनेको तो जी अभी चाहता है।

३ आदमी—आप न कुछ खाया न पिया—देखो तो!

दौलत०—भाई, अब ऐसा न होगा। दिनको अंगूर वगैरह मेवा और रातको बढ़िया भोजन !

४ आदमी—अब उसके दोनों लड़के सारी दौलत उड़ावेंगे।

दौलत०—छोड़ जाऊँगा, तब न !

५ आदमी—अच्छा, अब गाओजी।

दौलत०—अच्छा गाओ, सुनूँ।

(सबका गाना।)

गजल।

प्राण-रक्षामें बड़ी हैं झंझटें, यदि जानते।
तो न करते हम कभी इस जन्मकी ही चाहना॥
भोर होते नींद खुलती, हर घड़ी आफत खड़ी।
आयुको अपनी बिताना, घोर है शव-साधना।
स्नान करते भूख लगती, है सुलगती आगसी।
तब जुटाना अन्नका, उसको निगलना चाबना॥
अन्न चुक जाता, न बुझती पेटकी ज्वाला अहो।
नोन है तो घी नहीं, संयोग कुछ ऐसा बना॥
लेटते ही मक्खियाँ दिनको हमेशा दिक करें।
रातको फिर मच्छरोंका जुल्म होता है घना॥
हाय, आधी रातको जेवर जड़ाऊके लिए।
रूठना, रोना प्रियाका, मिनमिनाना माँगना॥
चीज लो तो दाम उसके माँगते हैं फिर असभ्य।
राह रोके हैं महाजन और करते लुचपना॥
ब्याह करते ही कई बच्चे भी हो जाते हैं हाय।
ब्याहनेमें औ पढ़ानेमें दिवाला पीटना॥

[दौलतरामके दोनों पुत्रोंका प्रवेश।]

१ पुत्र—जायदाद आधी मेरी है।

२ पुत्र—एक पैसा भी तुम्हारा नहीं है। लालाजी वसीयतनामेमें सब मेरे नाम लिख गये हैं।

दौलत०—लिख गया हूँ? कहाँ? मुझे तो नहीं याद!

१ पुत्र—वसीयतनामा जाली है। मैं साबित करूँगा।

२ पुत्र—कभी नहीं!

१ पुत्र—ज़रूर जाली है।

२ पुत्र—मैं मिस्टर दासको अपनी ओरसे खड़ा करूँगा।

१ पुत्र—मैं बैरिस्टर जैक्सनसे पैरवी कराऊँगा।

२ पुत्र—मैं दस हजार रुपये खर्च करूँगा।

१ पुत्र—मैं पन्द्रह हजार रुपये उठाऊँगा।

२ पुत्र—तू बेईमान है!

१ पुत्र—तू धोखेबाज है!

२ पुत्र—तू मूसा है!

१ पुत्र—तू मच्छर है!

२ पुत्र—मेरे घरसे निकल जा!

१ पुत्र—तेरा!—तेरे बापका घर है?

२ पुत्र—निकलो—

१ पुत्र—चुप रह—

२ नातेदार—अजी झगड़ा क्यों करते हो? आज खुशी मनाओ। ऐसा आनन्दका दिन, तुम्हारे बाप मरे हैं!

३ नातेदार—हाँ, पेट भरकर खाओ।

४ नातेदार—जी भरकर आनन्द मनाओ।

५ नातेदार—नाचो!

२ नातेदार—गाओ!

१ नाते०—मैंने एक गीत जोड़ा है !

२ नाते०—हाँ गाओ, वही गीत—

३ नाते०—कौन ?

१ नाते०—वही जो मैंने जोड़ा है,—' बुड्ढा मरा है—'

दौलत०—इसी बीचमें गीत भी बन गया ! बलिहारी !

(सबका गाना ।)

बुड्ढा मरा है बुड्ढा मरा है
बुड्ढा मरा है मरा है मरा है ।

दौलत०—बस, अब तो सहा नहीं जाता ।

(सबका गाना ।)

बुड्ढा मरा है मरा है मरा है ।

(दौलतराम लकड़ी हाथमें लिये आगे बढ़कर गाता है-)

बुड्ढा मरा नहिं बुड्ढा मरा नहिं
देखो अजी अभी बुड्ढा मरा नहिं ॥

१ पुत्र—ऐं ऐं ! यह कौन है ?

२ पुत्र—हाँ, यह कौन है ?

दौलत०—(लड़कोंसे) तुम चाहे जितना आश्चर्य प्रकट करो, लेकिन मुझको विश्वास है कि बुड्ढा अभी नहीं मरा और वह सशरीर तुम्हारे आगे खड़ा है ।

१ पुत्र—कैसे ?

२ पुत्र—ठीक तो है, कैसे ?

नातेदार लोग—(दौलतसे) तुम कौन हो जी, हमारे गानेमें खरमंडल डाल दिया ! निकलो । तुम कौन हो ?

दौलत०—मैं इन दोनों लड़कोंका बाप हूँ !

नातेदार०—बाप ! हो ही नहीं सकता। हम विश्वास ही नहीं करते। अच्छा, तुम साबित करो कि बाप हो।

दौलत०—सभी कुछ साबित करना होगा? भाइयो, सुनो—इस बातको तो कोई साला नहीं साबित कर सकता कि वह बाप है। इस बातपर तो विश्वास ही कर लिया जाता है।

नातेदार०—नहीं, हम लोग विश्वास नहीं करते। निकल जाओ।

दौलत०—कहाँ जाऊँ?

नातेदार०—यह हम क्या जानें? हम नहीं जानते।

दौलत०—दोनों लड़कोंने पहचान लिया है, मगर मुँहसे स्वीकार नहीं किया। बाहरे कलजुगी लड़के!

नातेदार—(दौलतसे) अजी सोचते क्या हो? दूधिया भंग है। पियोगे? लो जरासी।

दौलत०—(कुछ सोचकर) मैं तो जीता हूँ, फिर दूधिया क्यों छोड़ूँ! (भंग लेकर पीता है।)

[रण्डीका प्रवेश।]

१ नातेदार—लो बी गौहरजान आ गई। (गानेके ढंगसे) "आओ आओ मित्र!"

२ नातेदार—(उसी स्वरमें) "बैठिए सिर आँखोंपर।"

३ नातेदार—(उसी स्वरमें)

इश्ककी गोली बनाकर बामपर फेंका करूँ।
तू मुझे देखे-न देखे, मैं तुझे देखा करूँ॥

४ नातेदार—ठीक नहीं हुआ (दूसरे स्वरमें)—

इश्ककी गोली बनाकर बामपर फेंका करूँ।
तू मुझे देखे-न देखे, मैं तुझे देखा करूँ॥

५ नातेदार—दे–ए–ए–ए–ए–ए—

दौलत०—वाह, यहाँ तो सभी उस्ताद हैं।

१ नाते०—देखते क्या हो!

२ नाते०—बी गौहरजानको गाने दो।

दौलत०—(भंगके नशेमें) लेकिन मैं दौलतराम सेठ—

३ नाते०—पहले मैं गाऊँगा!—खा–आ–आ–आ–आ–!

४ नाते०—चुप।—कहूँ ऊँ–ऊँ।

५ नाते०—गाओ जान, कोई नाटककी चीज गाओ—

गौहर०—अच्छा, सुनिए—

बूटी पिलाके लुभाय गया कोई मुझे।

१ नाते०—वाह वाह वाह वाह।

२ नाते०—ठहरो बीबी, अन्तरा मुझे कहने दो।—

बड़े सबेरे जो कोई छाने, वाकी लंबी दीठ।
उड़त चिरैया वह पहचाने गिरी सड़कसे ईंट॥

१ नाते०—सबेरे फेर छनेगी भंग, सबेरे फेर छनेगी—

३ नाते०—सुनो—

दुसरे पहरे जो कोई छाने, बाके लंबे कान।
तवा कटोरा कलसी बेची, धर लोटेपर ध्यान॥

१ नाते०—सबेरे फेर छनेगी भंग, सबेरे फेर छनेगी।—

२ नाते०—अरे मेरी भी तो सुनो—

तिसरे पहरे जो कोई छाने, ज्यों भादौंकी कीच।
घरके जानें मर गये और आप नशेके बीच॥

दौलत०—अरे घरके जानें तो जाना करें, पर न मैं मरा हूँ और न नशेके बीचमें हूँ!—

१ नाते०—अरे चुप, सबेरे फेर छनेगी भंग, सबेरे—

५ नाते०—मेरी क्या यों ही रह जायगी। सुनो—

चौथे पहरे जो कोई छाने, बच्चा आपी आप।
बे-जोरू बे-ससुरेके हो, छे बच्चेका बाप॥

दौलत०—वाह बेटा, तुम्हारी खूब रही!

१ नाते०—अरररर सबेरे फेर छनेगी भंग—

गौहर०—**बूटी पिलाके लुभाय गया कोई मुझे।**

(सबका नाचना। साथ ही साथ दौलतका भी नाचना और गिरना।)

नातेदार—लो बी गौहरजान, एक ढेर हुआ तुम्हारे गानसे।

दौलत०—(पड़े ही पड़े नशेमें) अबे चुप—मैं सेठ—दौलतराम हूँ। या नहीं?—फिर—मैं कौन हूँ? कौन भाई दौलत, आ गये!

[बिहारी, दारोगाके वेषमें रामचन्द्र, एक हवालदार और दो सिपाहियोंके वेषमें नन्दू, मोहन और सुन्दरका प्रवेश।]

बिहारी—हाँ आगया दादा—

नातेदार—अरे पुलिस आ गई, भागो भागो! (भाग जाते हैं।)

बिहारी—(दारोगासे) यही दौलतराम बनकर आया है—असामियोंको धोखा देनेके लिए।

दारोगा—क्या तुम कहते हो कि मैं सेठ दौलतराम हूँ?

दौलत०—(हाथ जोड़कर) जी जमादार साहब।

(सिपाहियोंका पकड़ लेना।)

दारोगा—पकड़ो इसको।

दौलत०—जी मैं—

दारोगा—दौलतराम सेठ है!

दौलत०—(काँपता हुआ) जी, कभी किसी जन्ममें नहीं!

दारोगा—तब उसके जैसा रूप रखकर क्यों आया?

दौलत०—जी—

दारोगा—झूठ, सच बोलो।

दौलत०—दारोगा साहब, मेरे कहनेके पहले ही आपने मेरी बातको झूठा ठहरा लिया!

दारोगा—वह मैं जानता हूँ।

दौलत०—दारोगा साहब, यह तो मैं जानता था कि पुलिसके आदमी सर्वशक्तिमान् होते हैं, लेकिन यह न जानता था कि सर्वज्ञ भी होते हैं।

दारोगा—सच बोलो। (रूलका हूला मारना।)

दौलत०—जी वही कहनेवाला था, लेकिन इस मारसे तो सच बात भूली जाती है। अब मैं क्या कहूँ, तो आप खुश हों?

दारोगा—कि मैं दौलत सेठ नहीं हूँ। (रूल दिखाता है)

दौलत०—कभी नहीं। मारो न बाबा!

दारोगा—फिर तुम कौन है?

दौलत०—संपत सेठ–

दारोगा—संपत सेठ कौन?

दौलत०—दौलत सेठका छोटा भाई।

दारोगा—तो फिर दौलत सेठके जैसा चेहरा बनाकर क्यों आया?

दौलत०—जी—(सोचता है)

दारोगा—सच बोलो। (रूलका हूला मारता है) उसका ऐसा चेहरा बनाकर–

दौलत—हम दोनों जोड़िया भाई थे।

दारोगा—चुप रह।

दौलत०—अच्छा चुप रहूँगा।

दारोगा—(बिहारीको दिखाकर) ये कौन हैं?

दौलत०—पहले थे मेरे–अर्थात् दौलतरामके बहनोई; लेकिन अब उसकी स्त्रीके पति हैं !

दारोगा—यह तुम सच कह रहे हो ?

दौलत०—जी, मैं झूठ कभी कभी बोलता हूँ ।

दारोगा—नाक रगड़ो, कान पकड़ो ।

दौलत०—क्यों जमादार साहब ?

दारोगा—चुप रहो, कान पकड़ो ।

दौलत०—अच्छा साहब । (वही करता है)

दारोगा—कहो, मैं कभी किसी जन्ममें सेठ दौलतराम नहीं था ।

दौलत०—ऐसा ही होगा साहब ! मैं कभी न था ।

बिहारी—बॉर्ड बाय लिमिटेशन (Barred by limitation)

दारोगा—अच्छा, छोड़ दो ।

बिहारी—(दारोगासे) चलिए, कुछ जल-पान कर लीजिए ।

दौलत०—और मेरी भूतपूर्व विधवाके साथ दारोगा साहबकी जान-पहचान भी करा देना ।

दारोगा—चुप रहो !

दौलत—(डरकर) जी !

(दौलतके सिवा सब चल देते हैं ।)

दौलत०—(आप ही आप) अन्तको रूलके हूलोंसे यह साबित हो गया कि मैं दौलत सेठ नहीं हूँ । कहा ही है कि मारके आगे भूत भागते हैं । नहीं भाई, मैं मर गया था, यह बात झूठ नहीं है । हाँ, मर गया था । यह मेरा पुनर्जन्म है ! आज नया अनुभव और नया विश्वास पाकर मैं फिर जी उठा हूँ । मरनेके बाद जो कुछ होनेवाला था, वह जीतेजी अपनी आँखोंसे ही देख लिया । गरीबोंको सताकर

दौलत०—बड़ी कृपा हुई!

बिहारी—अच्छा, सेठजी, आपको कुछ शिक्षा मिली या नहीं!

दौलत०—बहुत कुछ।—यह मेरा पुनर्जन्म है।

गाना।

गजल (सोहनी)

व्यर्थ ही तूने जमा जोड़ी मिला सुख क्या भला?
हाय, इसके वास्ते काटा अनेकोंका गला?
गाड़ना, संदूकमें रखना, जमा-करना वृथा।
कालके आगे कहीं चलती किसीकी है भला?
जो न परउपकारमें या भोगमें दौलत लगी।
तो कहो, फिर साथ उसको कौन अपने ले चला?
दान या तो भोग या फिर नाश धनकी गति कही!
जो न देता और खाता, नाश ही उसको फला॥
सूमके पीछे सभी धन दस जगह लुट जायगा।
इस लिए खा ले, खिला ले और बन ले मन-चला॥

(पर्दा गिरता है।)

हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय
हीराबाग
बम्बई